

कि सी भी राज्य की शिक्षा व्यवस्था की आधारभूमि शिक्षक ही तैयार करते हैं। यदि शिक्षक ही पर्याप्त न होंगे तो शिक्षा के स्तर और नौनिहालों के भविष्य का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। देश के लगभग सभी राज्यों में सरकारी शिक्षकों की कमी है। शिक्षक मित्र कई अलग-अलग नामों से अल्प वेतन पर काम कर रहे हैं जो शर्मनाक है। राज्य में नीति-नियंत्रणों की प्राथमिकताओं में शिक्षा कहां खड़ी है। बच्चे कल का भविष्य हैं, यदि उनकी बुनियाद ही खोखली रह जाएगी तो वे कैसे राष्ट्र का दायित्व कंधों पर उठा पाने में सक्षम होंगे। विडंबना यह भी है कि आमतौर पर सरकारी स्कूलों में कम आय वर्ग के लोगों के बच्चे परिस्थितिवश ही जाते हैं। वहीं दूसरी ओर निजी स्कूल जिस तरह कारोबार का जरिया बन चुके हैं, उसके महेनजर कम आय वर्ग के अभिभावक प्राइवेट स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने से कतराते हैं। दरअसल, आज जो निजी स्कूलों का कारोबार फल-फूल रहा है उसके मूल में सरकारी स्कूलों की दशा-दिशा ही है। कुछ लोगों को लगता है कि वे स्कूल बीमार भविष्य का कारखाना बनने की दिशा में अग्रसर हैं। दरअसल, शिक्षकों की कमी से वे स्कूल जूझ रहे हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। आज 52 प्रतिशत छात्र निजी स्कूलों में पढ़ने लगे हैं। शायद ही कोई संपन्न व्यक्ति का बच्चा सरकारी स्कूलों में पढ़ता होगा। दरअसल, नियुक्तियां तो ग्रामीण स्कूलों के लिये होती हैं, लेकिन शिक्षक किसी न किसी तरह तबादला शहरी स्कूलों में करवा लेते हैं। बहरहाल, तंत्र को इस गंभीर होती समस्या की ओर ध्यान देना चाहिए। विद्यार्थियों के भविष्य के प्रति संवेदनशीलता दशाते हुए शिक्षकों की नियुक्ति को प्राथमिकता बनाना चाहिए। बिहार में अगर दो लाख शिक्षकों की बहाली हो रही है इसका अर्थ है कि इतने शिक्षकों की कमी है, यह देश के लिये शर्मनाक स्थिति है।

महंगी सब्जियां

हर साल बारिश के मौसम में जल्दी खराब होने वाली सब्जियों के दाम मांग व आपूर्ति के असंतुलन से बढ़ते हैं। लेकिन इस बार टमाटर के दाम सौ रुपये प्रति किलो तक पहुंचने ने सबको चौंकाया है। कभी प्याज को ये रतबा हासिल था। जो न केवल आम लोगों की आंखों में आंसू ला देता था बल्कि सरकार गिराने-बनाने के खेल में शामिल रहता था। दिल्ली की कई सरकारों की जड़ें हिलाने का काम प्याज ने किया। कह सकते हैं कि तब मजबूत विपक्ष ने जनता के दर्द को राजनीतिक हथियार बनाने में कामयाबी पायी थी। अब जनता के लिये जरूरी सब्जियों की महंगाई को मुद्दा बनाने की कृत्व व संवेदनशीलता विपक्षी दलों में नजर नहीं आती। निस्संदेह, हरियाणा-पंजाब सहित देश के लगभग सभी राज्यों में टमाटर की महंगाई की वजह यह बताया जा रही है कि स्थानीय टमाटर की फसल खत्म हो चुकी है और अन्य राज्यों से आने वाली नई फसल की आमद नहीं हो पाई है। लेकिन मानसून में पहले कभी टमाटर के दामों में ऐसी आग कभी नहीं लगी। परिवहन के साधन महंगे होने, बिजली, कृषि युक्त दवा का महंगा होना भी एक कारण है। कमोबेश फल-सब्जियों की महंगाई में एक घटक ऐसा भी है जो बाजार की हवा देखकर जमाखोरी पर उतारू हो जाता है। निस्संदेह, टमाटर आदि कुछ सब्जियां ऐसी हैं, जिनका भंडारण देर तक संभव नहीं है। लेकिन अदरक, लहसुन व प्याज का भूनाफाखोरों के गोदामों में भंडारण कुछ समय तक रह सकता है। निस्संदेह, रिटेल माफिया का बड़ा हाथ इस तरह की महंगाई को बढ़ाने में होता है। किसान ज्यादा फसल उगाता है तो भी नुकसान में रहता है और कम उगाता है तो भी नुकसान में रहता है। अच्छी फसल का लाभ न किसान को मिलता है और न उपभोक्ता को ही। बदलते मौसम और पर्यावरण में किसानों कठिन होता जा रहा है।

अंतरात्मा का सहारा

धर्म-प्रवाह
श्रीराम धर्मा आचार्य
 यदि तुम शांति, सामर्थ्य और शक्ति चाहते हो तो अपनी अंतरात्मा का सहारा पकड़ो। तुम सारे संसार को धोखा दे सकते हो किंतु अपनी आत्मा को कौन धोखा दे सका है ? यदि प्रत्येक कार्य में आप अंतरात्मा की सम्मति प्राप्त कर लिया करेंगे तो विवेक पथ नष्ट न होगा। दुनियाँ भर का विरोध करने पर भी यदि आप अपनी अंतरात्मा का पालन कर सके तो कोई आपको सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकता। जब कोई मनुष्य अपने आपको अद्वितीय व्यक्ति समझने लगता है और अपने आपको चरित्र में सबसे श्रेष्ठ मानने लगता है, तब उसका आध्यात्मिक पतन होता है।
(प्रस्तुति दीपक दयाल प्रसाद)



लिंगभेद से बचाओ...
मिलावट और त्योहार
 त्योहारों के मौसम में खाद्य पदार्थों में मिलावट का कारोबार, खासतौर पर मिठाइयों में, ज्यादा जोर पकड़ता है। इसके लिए आम लोगों को जागरूक होना चाहिए। खाद्य पदार्थों में मिलावट के मुख्य कारण एक तो आमजन सरकार द्वारा बनाए गए उपभोक्ता संरक्षण के कानून के प्रति जागरूक नहीं है। श्रावण माह आ रहा है ऐसे में मिलावट की आशंका बढ़ गयी है।
-शिवकुमार, गढ़वा



कल्पनाएं जब सजती और संवरती हैं तो उम्मीदों को पंख लग जाते हैं। इरादे और हौसले मजबूत हो जाते हैं। मंजिल खुद-ब-खुद तय हो जाती है। पूर्वांचल के भदोही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ग्रामीण विकास की सोच जमीन पर उतरती दिखती है। भदोही कालीन का हब है। यहां कालीन तैयार होते हैं। देश के नए संसद भवन में भदोही की कालीन बिछाई गई हैं। पूर्वांचल में वैसे अच्छे खासे शैक्षिक संस्थान हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय यहां की शैक्षणिक और सांस्कृतिक धरोहर हैं। लेकिन पूर्वांचल की 70 फीसदी आबादी कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। यहां पलायन अधिक है। आर्थिक विपन्नता की वजह से युवाओं के प्रतियोगी स्पर्धा के सपने अधूरे रह जाते हैं। लेकिन उन सपनों को पूरा करने के लिए भदोही जनपद से शुरू हुई एक नवाचार की पहल उत्तर प्रदेश और देश के लिए एक मिसाल बनती दिखती है।

भदोही के युवा जिला कलेक्टर गौरांग राठी की एक अनूठी पहल पूरे उत्तर प्रदेश और देश की सोच बदल सकती है। भदोही को शहर-ए-कालीन भी कहा जाता है। दुनिया भर से यहां कालीन निर्यात होता है। हालांकि शैक्षिक विकास को लेकर यहां बहुत कुछ नहीं हुआ है। लेकिन गांवों में नवाचार के तहत 'ग्राम ज्ञानालय' की स्थापना कर युवाओं को नई दिशा देने की पहल शुरू की गई है। इस तरह ग्रामीण अंचलों में स्थापित किए जा रहे ग्राम ज्ञानालय में युवाओं के लिए अकादमिक स्तर की सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। जनपद के 546 ग्राम पंचायतों में आधुनिक 'ग्राम ज्ञानालय' की स्थापना की तरफ बड़ी तेजी से कदम बढ़ रहे हैं।

भदोही जनपद में तकरीबन 150 गांवों में इसकी शुरुआत हो चुकी है। शुरू में ही जाँब की तैयारी करने और पढ़ने वाले करीबन 4000 युवा और छात्र-छात्राएं इससे जुड़कर उच्च गुणवत्ता परक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसकी वजह से उनके शैक्षिक विकास का आधार बेहद मजबूत हो रहा है। पूरे देश में अपनी तरह का आधुनिक सोच को प्रदर्शित करने वाला



- मनोज कुमार

वाचनालय में भरपूर पुस्तक, फर्नीचर, सीसीटीवी, स्मार्ट टीवी और ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा अभ्युदय योजना के तहत रिटायर्ड शिक्षक, प्रवक्ता और दूसरे विषय के विशेषज्ञ इन छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। संबंधित पंचायत या ग्राम सचिवालय भवन में ही एक खास कमरा बनाकर वहां संचालित किया जा रहा है।

यह 'ग्राम ज्ञानालय' युवाओं को तेजी से आकर्षित कर रहा है। योगी सरकार के जनप्रतिनिधि इसमें बढ़-चढ़ कर सहभागिता करते दिखते हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव का अध्यक्षता में विकास प्राथमिकता के कार्यक्रमों में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में जिलाधिकारी गौरांग राठी ने पीपीटी के माध्यम से 'ग्राम ज्ञानालय' के विजन से शासन को अवगत कराया है। मुख्य सचिव नवाचार को इस अनूठी पहल से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट को केंद्र सरकार को भेजा जाएगा। इस तरह की सुविधा पूरे उत्तर प्रदेश और देश में उपलब्ध कराई जानी चाहिए। युवाओं में शैक्षणिक विकास और प्रतियोगी स्पर्धा पैदा करने के लिए यह

नवाचार अपने तरह का अकल्पनीय है। युवाओं के सपनों को आयात देने के लिए ग्राम पंचायतों में इस तरह के ज्ञानालय यानी वाचनालय की स्थापना की जा रही है। वाचनालय में भरपूर पुस्तक, फर्नीचर, सीसीटीवी, स्मार्ट टीवी और ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा अभ्युदय योजना के तहत रिटायर्ड शिक्षक, प्रवक्ता और दूसरे विषय के विशेषज्ञ इन छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। संबंधित पंचायत या ग्राम सचिवालय भवन में ही एक खास कमरा बनाकर वहां संचालित किया जा रहा है। गांव के पंचायत प्रतिनिधि इसमें खासी भूमिका निभा रहे हैं। ग्रामीण अंचलों में युवाओं में शिक्षा

नेकियों का सिला बंदी में मिले, और शोहरत की कमाई क्या है, इस बुलंदी पे आ के जाना है, अच्छा होने में बुराई क्या है...!
- कुमार विश्वास, कवि

जन्मानंद की हार्दिक शुभकामनाएं और जोहार, माही। आप सदैव स्वस्थ और सुखी रहें, यही कामना करता हूँ।
- हेमंत सोरेन

आपके ट्वीट

जीवन में उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पथ के अवरोधों का हड़ता पूर्वक सामना करें। असफलता कुछ और नहीं अपितु सफलता प्राप्ति के पूर्व की संयुचना ही है। अतः शुभ संकल्प के साथ सद्कार्यों में संलग्न है।
-स्वामी अवधेशानंद गिरी

बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के लिये सजगता जरूरी

नागेन्द्र सिंह
हिमाचल समेत देश के पर्वतीय राज्यों में भूस्खलन, आकस्मिक बाढ़ और सड़क दुर्घटनाएं अधिक संख्या में होती हैं, लेकिन इन सब के लिये प्रदेश की भौगोलिक स्थिति को ही जिम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता। देश में हर वर्ष डेढ़ लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। भारत में दुर्घटनाओं की संख्या प्रतिवर्ष 5 लाख के करीब है। हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के आंकड़ों के अनुसार, 2019-2020 में 1791 दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 671 लोगों की जानें गयीं और 2520 लोग बुरी तरह जख्मी हुए। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की आबादी 68.6 लाख थी, तब प्रति हजार नागरिकों में 107 के पास वाहन थे। वर्ष 2019 में वाहनों की संख्या बढ़कर 16 लाख हो गयी है। वर्ष 2018 तक देश में सड़कों पर 5803 ब्लैक स्पॉट थे, जहां पर सबसे अधिक सड़क हादसे हुए। हिमाचल प्रदेश में 116 ऐसे ब्लैक स्पॉट चिह्नित किये गए हैं। हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा एवं समाज में तेजी से बदलाव लाने के लिए नीतियां निर्धारित करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में जब उन्होंने समाज में उच्च वर्गों के गलत तरीके से वे जल्द ही काग्रेस के भीतर असंतोष का कारण बन गए। 25 जून, 1975 को आपातकाल घोषित किए जाने के समय आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उस समय वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति व

प्रति हजार नागरिकों में 107 के पास वाहन थे। वर्ष 2019 में वाहनों की संख्या बढ़कर 16 लाख हो गयी है। वर्ष 2018 तक देश में सड़कों पर 5803 ब्लैक स्पॉट थे, जहां पर सबसे अधिक सड़क हादसे हुए। हिमाचल प्रदेश में 116 ऐसे ब्लैक स्पॉट चिह्नित किये गए हैं। हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा एवं समाज में तेजी से बदलाव लाने के लिए नीतियां निर्धारित करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में जब उन्होंने समाज में उच्च वर्गों के गलत तरीके से वे जल्द ही काग्रेस के भीतर असंतोष का कारण बन गए। 25 जून, 1975 को आपातकाल घोषित किए जाने के समय आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उस समय वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति व

प्रति हजार नागरिकों में 107 के पास वाहन थे। वर्ष 2019 में वाहनों की संख्या बढ़कर 16 लाख हो गयी है। वर्ष 2018 तक देश में सड़कों पर 5803 ब्लैक स्पॉट थे, जहां पर सबसे अधिक सड़क हादसे हुए। हिमाचल प्रदेश में 116 ऐसे ब्लैक स्पॉट चिह्नित किये गए हैं। हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा एवं समाज में तेजी से बदलाव लाने के लिए नीतियां निर्धारित करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में जब उन्होंने समाज में उच्च वर्गों के गलत तरीके से वे जल्द ही काग्रेस के भीतर असंतोष का कारण बन गए। 25 जून, 1975 को आपातकाल घोषित किए जाने के समय आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उस समय वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति व

को लेकर जांच और उनकी मानसिक थकान के लिये भी समय-समय पर जानकारी हासिल करनी होगी। शराब तथा दूसरे नशीले पदार्थों का सेवन भी अधिकतर दुर्घटनाओं का कारण बनता है। बस तथा दूसरे वाहन चालकों को दिए जाने वाले चालक लाइसेंस पूरी चालन निपुणता को देख कर ही प्रदान किये जाने चाहिए। प्रदेश में चलने वाली सभी बसों में जीपीएस की व्यवस्था की जानी चाहिए, जितने भी राजमार्ग हैं उन पर गति सीमा का उल्लंघन कर रहे चालकों को न केवल चेतावनी देने होगी, बार-बार हिमाचल पथ परिवहन की 3200 से अधिक बसें चलती हैं यह आंकड़े 2018 के हैं, करीब 3500 बसें निजी संस्थानों की भी चलती हैं। सरकार को सख्ती से बसों की फिटनेस, चालकों के स्वास्थ्य

युवा तुर्क चंद्रशेखर, बागी धरती, तीखे तेवर

रमेश सरकट धमोत
 भारत की राजनीति में चंद्रशेखर अकेले ऐसे नेता हैं जो कभी किसी सरकार में मंत्री रहे बिना ही सीधे प्रधानमंत्री बने। युवा तुर्क के रूप में विख्यात चंद्रशेखर ने काग्रेस में रहते हुए रामधन और मोहन धारिया के साथ मिलकर काग्रेस में एक जोड़ी बनाई थी। यह जोड़ी उस तक अपनी बेबाक राय को लेकर खसकी प्रसिद्ध थी चंद्रशेखर का जन्म 01 जुलाई 1927 को उत्तर प्रदेश के 'बागी' बलिया जिले के इब्राहिमपट्टी गांव में किसान परिवार में हुआ था। वो 1977 से 1988 तक जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे। चंद्रशेखर अपने छात्र जीवन से ही राजनीति की ओर आकर्षित थे और

व्यक्तित्व
 काग्रेस में शामिल हो गए। 1967 में उन्हें काग्रेस संसदीय दल का महासचिव चुना गया। संसद के सदस्य के रूप में उन्होंने दलितों के हित के लिए कार्य करना शुरू किया एवं समाज में तेजी से बदलाव लाने के लिए नीतियां निर्धारित करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में जब उन्होंने समाज में उच्च वर्गों के गलत तरीके से वे जल्द ही काग्रेस के भीतर असंतोष का कारण बन गए। 25 जून, 1975 को आपातकाल घोषित किए जाने के समय आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उस समय वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति व

काग्रेस में शामिल हो गए। 1967 में उन्हें काग्रेस संसदीय दल का महासचिव चुना गया। संसद के सदस्य के रूप में उन्होंने दलितों के हित के लिए कार्य करना शुरू किया एवं समाज में तेजी से बदलाव लाने के लिए नीतियां निर्धारित करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में जब उन्होंने समाज में उच्च वर्गों के गलत तरीके से वे जल्द ही काग्रेस के भीतर असंतोष का कारण बन गए। 25 जून, 1975 को आपातकाल घोषित किए जाने के समय आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उस समय वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति व

काग्रेस में शामिल हो गए। 1967 में उन्हें काग्रेस संसदीय दल का महासचिव चुना गया। संसद के सदस्य के रूप में उन्होंने दलितों के हित के लिए कार्य करना शुरू किया एवं समाज में तेजी से बदलाव लाने के लिए नीतियां निर्धारित करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में जब उन्होंने समाज में उच्च वर्गों के गलत तरीके से वे जल्द ही काग्रेस के भीतर असंतोष का कारण बन गए। 25 जून, 1975 को आपातकाल घोषित किए जाने के समय आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया जबकि उस समय वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति व

संस्थापक
स्व. डॉ. अभय कुमार सिंह
 वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
 द्वारा चिरौंदा, बोड़ैया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 94313-55233
 पिन: -834006
 e-mail
Khabarmantra.city@gmail.com
 R.N.J.No.
JHAHM/2013/51797
 *पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।



एकके मुरलीधर

एक संपूर्ण समाचार की जो परिकल्पना खबर मन्त्र हिंदी दैनिक के रूप में की गयी थी उसके एक दशक बाद और तेजी से आगे बढ़ने का समय आ गया है। संवाद की वह परम्परा जिसे हम नारदीय परम्परा कहते हैं उससे आज तक सूचना का प्रवाह सदैव समाज के निर्माण को समर्पित होता है। खबर मन्त्र की स्थापना भी संस्थापक अभय कुमार सिंह की उसी चेतना और राष्ट्र निर्माण की प्रतिबद्धता को लेकर की गयी थी जिससे हम वैश्विक ताकत बन सके।

झारखंड राज्य के निर्माण के बाद से ही राज्य के संसाधनों और युवाओं को दिशा दिखाने का दुरुह कार्य की चुनौती को डॉ सिंह के कुशल नेतृत्व में आंभ हुआ। उदेश्य स्पष्ट था कि राष्ट्र हित सर्वोपरि और सबकी बात सबके साथ। एक दशक की यात्रा में उन सभी मापदंडों पर खरा उतरे जिसे पत्रकारिता का आदर्श कहा जाता है। मुझे याद है कि नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के एक कार्यक्रम में मुझे तत्कालिन वीसी निर्मल जी ने बुलाकर पूछा था कि आपके अखबार और आपके समाचार लेखों में कोई संपादकीय या प्रबंधकीय दबाव नज़र नहीं आता है इसका क्या कारण है? यह आज की तारीख में बहुत बड़ी बात है। उन्होंने आगे कहा कि जहां तक मुझे जानकारी मिली है कि खबर मन्त्र कोई देश का बड़ा व्यापारिक घराना का अखबार नहीं है फिर इतनी स्पष्टता कि सुबह सुबह मन खुश हो जाता है।

मैंने उनसे कहा कि सर हमारे संपादक अभय कुमारसिंह का कहना है कि खबर तो खबर है सूचना और जानकारी भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उनका मानना था कि सार्वजनिक जीवन में काफी लोगों से जान पहचान है अगर मैं अपने अखबार के संपादकीय विभाग के सहयोगियों के काम में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता हूं। यह किसी भी संस्थान के लिये बहुत बुरी स्थिति होती है। वीसी साहब बहुत खुश हये और कहा कि मैं आपके संपादक जी से मुलाकात अवश्य करूंगा और वे आये भी।

खबर मन्त्र के प्रकाशन के आरंभ से ही युवाओं की आवश्यकताओं जैसे जाँब, उनके नैतिक उत्थान, झारखंड की समस्या और उसमें युवाओं के लिये पैदा होती कठिनाई, राजनीति को दशा-दिशा दिखाने का काम, पूरे राज्य के हर जिले, प्रखंड और पंचायत तक की समस्या को उनके अनुसार पर्याप्त स्थान देकर उन लोकतांत्रिक मूल्यों को जीवित करना जिससे राष्ट्र प्रगति करता है।

मीडिया में हो रहे परिवर्तन को लेकर जो चुनौती सामने आ रही थी उसे समझते हुए अखबार के आरंभ से ही सामाजिक सरोकार को पत्रों तक छपने वाले अखबार से उपर उठा दिया। युवाओं के लिये जहाँ शिक्षा-दीक्षा नामक पृष्ठ आरंभ किया गया वहीं स्कूल, कॉलेज और शैक्षणिक संस्थानों में करियर और मोटिवेशन के विशेषज्ञों की टीम बनाकर युवा शक्ति को सशक्त करने का काम खबर मन्त्र ने बेखुबी किया।

भव्य आधारभूत संरचना, अनुभवी टीम और जोश भरने वाले संपादक डॉ अभय कुमार सिंह ने एक बड़ी लकीर खींचने की प्रेरणा दी।

सूचनाओं के हर फलक पर विशेष ध्यान

खबर मन्त्र में खबरों और सूचनाओं में पाठकों के उपयोग और उनकी समझ तक का पूरा ख्याल रखा गया। पूरे प्रांत के हर जिले और प्रखंड स्तर से आती खबरों को पूरी तरह से जांच परख कर ही प्रस्तुत किया गया। इससे अखबार की मांग लगातार बढ़ती गयी। एक समाचार माध्यम का कार्य समाज के सबसे निचले तबके के हितों और कठिनाइयों से सरोकार और शासन को अलगत कराना है। यही नहीं सरकार और प्रशासन की सक्रियता से भी आम जनों को जोड़ें रखना भी सबसे बड़ा दायित्व है। अखबार के प्रकाशन के पहले दिन से आज तक उन मूल्यों पर कार्य करता रहा है।

युवाओं का हित राष्ट्र हित

पूरी दुनिया में भारत सबसे युवा देश है। कोई भी मीडिया संस्थान युवाओं से जुड़े बगैर अपनी मुकाम हासिल नहीं कर सकता है। इस बात को समझते हुए पूरे राज्य के शैक्षणिक संस्थानों में नामांकन और शैक्षणिक सुविधाओं का प्रमाणिक खबर प्रकाशित कर राज्य औरदेश के युवाओं को सचेत किया। झारखंड की मूल समस्या शिक्षा का निम्न स्तर और ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं की निराशा, बेरोजगारी पलायन और नक्सली गतिविधियों से जुड़ी संवेदनशील खबरों को पूरी सावधानी से प्रकाशित किया। इस कार्य से खबा मन्त्र की विश्वसनीयता लगातार बढ़ती गयी।

स्कूल, कॉलेज और शैक्षणिक संस्थानों में विशेषज्ञों के माध्यम से संवाद के कारण जहाँ हमारी समाजिक सरोकार का कार्य संपादित हुआ वहीं पूरे झारखंड राज्य में नहीं पूर्वी भारत में अखबार की एक पहचान बनी। शिक्षा के महत्व को समाज में स्थापित करने में हमारे अखबार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

हर पहलू को छूने का प्रयास

अखबार आरंभ होने के साथ ही झारखंड लोक सेवा आयोग के घोटाले की खबरों से सनसनी फैल गयी। राज्य के युवाओं के भविष्य का सवाल था और राजनीति, प्रशासन सभी ओर यह विमर्श चल रहा था कि क्या होगा? इस बीच खबर मन्त्र ने लगातार जेपीएससी घोटाले की खबर सबसे बेतहर ढंग से छापकर अपनी उपयोगिता और अपनी दक्ष टीम की क्षमता को प्रकट कर दिया। यही कारण था कि झुंड के झुंड युवा खबर मन्त्र के परिसर में आकर आकर अखबार को घन्यवाद देते और अपनी समस्याओं से अवगत कराने लगे। जेपीएससी घोटाला को चारा घोटाला से भी बड़ा माना गया और इसकी चर्चा पूरे देश में हो रही थी। इस पूरे घटनाक्रम का सटीक और सही रिपोर्ट से अखबार का आरंभ ही युवाओं के हित और उसके

खबर मन्त्र - राष्ट्र निर्माण का अहम मंत्र

रखें एक से ज्यादा विकल्प, संवरेगा करियर

उर्सुलाइन इंटर कॉलेज में खबर मन्त्र का करियर सह मोटिवेशन काउंसिलिंग, छात्राओं ने लिया ऊंची उड़ान भरने का संकल्प



महानत करने वाली को मिलती है सफलता



सिर्फ सपने बुनने से नहीं मिलती सफलता

शिक्षक कुमार ने बड़े ही रोचक तरीके से बताया कि करियर को लेकर सिर्फ थोड़े सपने बुनने सफलता नहीं मिलती है। हमें अपने ज्ञान, विचार और करियर के एक से ज्यादा विकल्प पर सोच कर अपने बदन बंधिए। परीक्षा में अंक लाना अलग बात है और जीवन में करियर में सफलता दूसरी बात। सफलता के लिए ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करनी होगी। दिल्ली में एडमिशन के लिए कई विद्यार्थी जिनमें अंकोंवाला और कोचिंग प्रशिक्षण है, उसमें 99 प्रतिशत तक अंक लाने पड़ रहे हैं। रांची रहने के कई कॉलेजों के कट ऑफ मार्क भी तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए, करियर के लिए बेहतर समानता एक पढ़वना अवसर है। दिल्ली के समान डेजुएट कॉलेजों में प्लेसमेंट ही रहा है। लॉ, एम्बीए, बीबीए, कॉमर्स, इकोनॉमिक्स, बैचिंग, एग्रेससरी, रेलवे, एनजीओ, कॉल सेक्टर, अडवर्टीसिंग, सिविल सर्विस, नैट, टीचर्स जैसे विविध क्षेत्र के करियर में जुड़ने के लिए अपने अच को तैयार करें।

रोजाना की जानकारी महत्वपूर्ण

पत्रकार एकके मुरलीधर ने कहा कि अच्छे शिक्षण संस्थान में पढ़ने का उदेश्य पूरा होना चाहिए। देशस की धाराई के साथ ही हमें विविध प्रतियोगिता परीक्षा के पढ़ने, उसकी पूरी गूथ समझनी से अग्रदंडिया और उसके अनुसर अपनी

देश और समाज को समर्पित 10 साल



अनुष्का चौधरी

10 साल के कम समय में अगर किसी समाचार पत्र का राज्य में पहचान बन जाए तो किसी भी प्रकाशन दैनिक अखबार के लिये बड़ी बात है। खासकर जब आपको लगातार और ईमानदारी से काम करना होता है। मैं 16 साल की थी जब मैंने पहली बार खबर मन्त्र के बारे में सुना। तब किसने सोचा होगा कि 4 साल बाद मैं यहाँ सबसे अनुभवी, विनम्र और मददगार लोगों के साथ एक प्रशिक्षु के रूप में काम सीखने के लिये ज्वाइन करूंगी। चूँकि खबर मंत्र अपनी 10वीं वर्षगांठ पूरी करेगा और 11 वे साल में प्रयास करेगा इसलिए मैं यहाँ एक प्रशिक्षु के रूप में अपना अनुभव साझा करते हुए सम्मानित महसूस कर रही हूँ।

खबर मंत्र अखबार में इंटरनशिप करना मेरी पेशेवर यात्रा में एक निर्णायक क्षण था। साक्षात्कार आयोजित करने से लेकर सम्मोहक लेख लिखने तक, मैंने एक परिवर्तनकारी यात्रा शुरू की जिसने मेरे ज्ञान का विस्तार किया, मेरे कौशल को निखारा और समाचार रिपोर्टिंग की दुनिया के लिए मेरे अंदर एक गहरा जुनून पैदा किया। अपने पहले दिन हलचल भरे न्यूज़रूम में कदम रखते हुए, मैं ऊजावर्जन माहौल और कहानियों के सामने

बदलाव से वैश्विक पहचान बनाता खबर मन्त्र

आने की अथक गति से अभिभूत हो गया। अनुभवी पत्रकारों जैसे अविनाश ठाकुर जी, मुरलीधर जी आदि संपादकों के सहयोग करने से मुझे समाचार संपादन की जटिलताओं का पता चला। मैंने तेजी से पत्रकारिता की तत्कालिकता और मांग वाली प्रकृति को अपनाते हुए एक पेशेवर समाचार कक्ष की गतिशीलता को समझना सीख लिया। टीम के बीच भाईचारा स्पष्ट था, क्योंकि उन्होंने आसानी से अपनी विशेषज्ञता साझा की और मुझे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपीं।

एक प्रशिक्षु के रूप में, मुझे विभिन्न विषयों पर गहन शोध करने और उन पर लेख लिखने का काम सौंपा गया था। इस अनुभव का सबसे अच्छा हिस्सा यह था कि मुझे खुद को अभिव्यक्त करने की आजादी थी और यह केवल खबर मंत्रा के लोगों के कारण था। उन्होंने मेरे लेखन को प्रोत्साहित किया, मुझे अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रेरित किया और मेरे लेख प्रकाशित किए जो मेरे जीवन के सबसे बड़े मील के पत्थर में से एक साबित हुए। इस अनुभव ने मुझे रिपोर्टिंग में संपूर्णता और सटीकता का महत्व सिखाया। मैंने बड़ी मात्रा में जानकारी को छांटना, स्रोतों की पुष्टि करना और तथ्यों की सावधानीपूर्वक जांच करना सीखा। विविध पृष्ठभूमि के विषयों के साक्षात्कार ने मेरे संचार कौशल को चुनौती दी और मुझे तीक्ष्ण प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित

किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि मैं प्रत्येक कहानी के पीछे की सच्चाई को उजागर कर सकूँ।

मनमोहक लेख तैयार करने की कला एक ऐसा कौशल था जो मैंने यहाँ अखबार के साथ अपनी इंटरनशिप के दौरान विकसित किया था। अनुभवी मुरलीधर सर के मार्गदर्शन में, मैंने पाठकों का ध्यान खींचने वाली संक्षिप्त, जानकारीपूर्ण और आकर्षक रचनाएँ लिखना सीखा। जिज्ञासा जगाने वाली सुविख्या लिखने से लेकर लेखों को प्रभावी ढंग से संरचित करने तक, मैंने अपनी लेखन शैली में सुधार किया। संपादकों से मुझे जो प्रतिक्रिया और रचनात्मक आलोचना मिली, वह मेरी कहानी कहने की क्षमताओं को बेहतर बनाने और मेरे गद्य को बेहतर बनाने में अमूल्य थी। खबर मंत्र में काम करने से मुझे लगातार विकसित हो रहे उद्योग में अनुकूलनशीलता का महत्व सिखाया गया। ब्रेकिंग न्यूज़ स्टोरीज को कवर करने से लेकर फीचर लेखों पर काम करने तक, मैंने नई चुनौतियों को स्वीकार करना और अपने दृष्टिकोण को तुरंत समायोजित करना सीखा। समय-सीमा माफ करने योग्य नहीं थी, और मुझे उच्च-गुणवत्ता वाला काम करते समय दबाव में शांत रहने की आवश्यकता का एहसास हुआ। अनुकूलन की इस क्षमता ने न केवल मेरी पेशेवर क्षमता को बढ़ाया बल्कि मुझे एक मूल्यवान जीवन

कौशल से भी सुसज्जित किया।

मेरे अनुभव के सबसे फायदेमंद पहलुओं में से एक क्षेत्र के पेशेवरों से जुड़ने का अवसर था। नेटवर्किंग कार्यक्रमों, प्रेस कॉन्फ्रेंस और साक्षात्कारों ने मुझे स्थापित पत्रकारों, उद्योग विशेषज्ञों और सार्वजनिक हस्तियों के साथ बातचीत करने की अनुमति दी। इन कनेक्शनों ने न केवल मेरे पेशेवर नेटवर्क का विस्तार किया बल्कि मेरी भविष्य की करियर आकांक्षाओं के लिए अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

मैंने स्थानीय खाद्य उत्पाद जैसे रूगड़ा, मशरूम पर रिपोर्ट तैयार की जो प्रमुखता से छापी गयी। इससे मेरे आत्मविश्वास में इजाजा हुआ। लिखने और समझने की छूट खबर मन्त्र के टीम की विशेषज्ञता रही है। मुझे अखबार के पहले, दूसरे और संपादकीय पृष्ठ के अतिरिक्त फीचर पेज पर काम करने का अवसर मिला। मुझे यह बताने में कोई संकोच नहीं है कि छोटें से कार्यकाल में ही जिस प्रकार मुझे स्थान प्राप्त हुआ उससे मेरे पत्रकारिता के पाठ्यक्रम का पूरा करने के साथ इस दिशा में करियर की संभावनाओं का द्वारा खोल रहा है। जैसा कि मुरलीधर सर ने बताया कि प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता बनी हुई है और खबर मन्त्र भी तेजी से उन बदलावों के साथ प्रस्तुत हो रहा है जिससे हमारी पाठक तक पहुंच बनी रहे। जैसे खबर मंत्र का ई पेपर

भी बहुत उपयोगी है और इसके पाठकों में दिनों दिन ईजाजा हो रहा है। पूरी दुनिया में ई पेपर की पठनीयता है और हिंदी का प्रसार अक्सर था। नेटवर्किंग कार्यक्रमों, प्रेस कॉन्फ्रेंस और साक्षात्कारों ने मुझे स्थापित पत्रकारों, उद्योग विशेषज्ञों और सार्वजनिक हस्तियों के साथ बातचीत करने की अनुमति दी। इन कनेक्शनों ने न केवल मेरे पेशेवर नेटवर्क का विस्तार किया बल्कि मेरी भविष्य की करियर आकांक्षाओं के लिए अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

मैंने स्थानीय खाद्य उत्पाद जैसे रूगड़ा, मशरूम पर रिपोर्ट तैयार की जो प्रमुखता से छापी गयी। इससे मेरे आत्मविश्वास में इजाजा हुआ। लिखने और समझने की छूट खबर मन्त्र के टीम की विशेषज्ञता रही है। मुझे अखबार के पहले, दूसरे और संपादकीय पृष्ठ के अतिरिक्त फीचर पेज पर काम करने का अवसर मिला। मुझे यह बताने में कोई संकोच नहीं है कि छोटें से कार्यकाल में ही जिस प्रकार मुझे स्थान प्राप्त हुआ उससे मेरे पत्रकारिता के पाठ्यक्रम का पूरा करने के साथ इस दिशा में करियर की संभावनाओं का द्वारा खोल रहा है। जैसा कि मुरलीधर सर ने बताया कि प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता बनी हुई है और खबर मन्त्र भी तेजी से उन बदलावों के साथ प्रस्तुत हो रहा है जिससे हमारी पाठक तक पहुंच बनी रहे। जैसे खबर मंत्र का ई पेपर

